शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

धार्मिक क्षेत्र में संगीत

प्राप्तिः 25.11.2022
स्वीकृतः 15.03.2022

डॉ० अनीता कश्यप
वरिष्ठ प्रवक्ता
रघुनाथ गर्ल्स पी० जी०, कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *anubhavkashyup@gmail.com*

सारांश

धार्मिक क्षेत्र में संगीत की कम महत्वपूर्ण भूमिका नही है। जिस संगीत की उत्पत्ति ही ईश्वर के द्वारा हुई हो वह ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग भी अवश्य होगा। ''संगीत ही एक ऐसा माध्यम है, जो स्वर्ग प्राप्ति की अनुभूति कराता है। संगीत साधक नाना कष्टों को झेलते हुए भी मोक्ष मार्ग तक पहुँच जाते है। (1) भारतीय विद्वानों ने संगीत को उदय की अनुभूतियों का सफल साधन मानते हुये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि की प्राप्ति के लिये पूर्ण रूप से सक्षम माना है। भारतीय दार्शनियों ने कला और मुक्ति का गहन सम्बन्ध बताया है जो कला केवल भौतिक सुखों को देने वाली हो, वह कला, कला नही ही क्योंकि कला का अंतिम उद्देश्य भौतिक संसार से उठकर ऐसी अवस्था को प्राप्त करना है जिसमें भौतिक द्वन्दों की सत्ता ही विनठर हो जाये। (2) संगीत का उद्देश्य ही भगवान की उपासना माना गया है। (3) आदिकाल से ही संगीत का सम्बन्ध ईश्वरोपासना व धार्मिक कार्यो से रहा है। संगीत का जन्म पवित्रता और धार्मिकता से ओत प्रोत धर्म की पृष्ठभूमि में हुआ।

ऋग्वैदिक कालीन सभ्यता पूर्ण रूप से धर्म अनुप्राणित सभ्यता के रूप में हमें दिखाई देती है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र धर्म से बंधा है। ईश्वरोपासना और संगीत दोनों का घनिष्ट सम्बन्ध ऋग्वैदिक काल में दृष्टिगोचर होता है इस काल ईश्वरीय उपासना के समय पूर्ण सांगीतिक वातावरण होता था। ईश्वर की उपासना अनेक वाघों के वादन तथा गायन द्वारा सम्पन्न होती थी। अपने ईष्ट देव को प्रसन्न रखने तथा परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनाये रखने के लिये पूर्ण सांगीतिक वातावरण बनाना एक प्रकार से अनिवार्य माना जाता था।

इस युग में जो यज्ञ किये जाते थे उनके यंत्रों को भी विभिन्न गायन शैलियों में गाकर यज्ञ परिपूर्ण किये जाते थे। वेद पाठ करने का ढंग ही [1]सुर और लय पर आधारित है जो उनकी संगीत प्रियता का प्रमाण है।

ऋग्वैद में इन्द्र को यह कहते हुये बताया गया है कि ''रथकार के कौशल से निर्मित रथ चक्र जिस प्रकार सन्तोष जनक होता है उसी प्रकार कुशलता से प्रयुक्त संगीत आकर्षण का क्रेन्द बन जाता है।

वैदिक काल की भांति रामायण काल में भी संगीत धर्म के साथ जुड़ा हुआ था। रामायण का विषय ही धार्मिक है। रामायण की रचना संगीत के माध्यम से हुई थी। यज्ञों में भी संगीत आयोजन किया जाता था। ईश्वर की अराधना भी गीत और नृत्य अर्थात संगीत के द्वारा की जाती थी।

महाभारत काल भक्ति की धारा संगीतमय होकर प्रमादित हो रही थी। यसादि समारोहों पर गायन के साथ सदैव वीणा वादन किया जाता था।

जैन युग में महावीर स्वामी के प्रयासों से ब्राहमणों का संगीत पर प्रयुत्व समाप्त होने लगा और संगीत जन–जन तक पहुँचा जैन आगमों का जन–जन में प्रचार करने के लिये चलित गीतों का उपयोग किया जाता था। (1) अतः इस काल में धर्म संगीत से अछूता नही रहा। इस प्रकार प्रत्येक वर्ग में संगीत को अपने जीवन में प्रविष्ट कर लिया था। (2) बौद्धकाल में जैन धर्म के समान धर्म संगीत से अछूता न रहा इस समय संगीत सभाओं का आयोजन होता था। नृत्यकियां नृत्य करती थी।

गुप्त युग को वैदिक धर्म के पुनः उत्थान का युग माना जाता है। ''समुद्र गुप्त के काल में वैदिक यज्ञ परम्परा का पुनः प्रवर्तन हुआ, इनके द्वारा किये गये अश्वमेघ यज्ञ में वैदिक गान परम्परा का अनुसरण किया गया हो यह कहने में आपत्ति नही।

इस युग में धार्मिक उत्सवों का विशेष प्रचार था। जनता इन उत्सवों में बड़ी रूचि रखती थी जो पूर्ण रूप से संगीतमय होते थे। इसमें सम्मिलित होकर वह पूरा आनन्द प्राप्त करते थे। रथ यात्रा पूर्ण रूप से सांगीतिक हुआ करती थी। इसका आयोजन प्रति वर्ष होता था। निश्चित समय पर सभी ग्रहस्थ और सन्यासी आकर एकत्र हो जाते थे रात भर संगीत के कार्यक्रम होते थे ऐसा प्रतीत होता है। अन्य पर्वो पर भी इसी प्रकार के धार्मिक उत्सवों का आयोजन किया जाता था यह उत्सव मनोरंजन और आमोद प्रमोद के ऐसे साधन थे जिसमें समाज के सभी वर्ग के लोग सामूहिक रूप से सम्मिलित होते थे।

यह युग भक्ति मार्ग का युग कहा जाता है। इस समय मन्दिरों में संगीत का पर्याप्तमात्रा में प्रचलन था। मन्दिरों में भी उत्सव बड़े धूमधाम से मनाये जाते थे। राजपूत काल में कृष्ण को आलौकिक पुरूष मानकर पूजा जाने लगा। वासुदेव, कृष्ण की मूर्तिया, मन्दिर में स्थापित की गयी। इस प्रकार भक्ति गीत, राग आदि के द्वारा भक्ति इस संगीत का विकास होने लगा।

इस काल में राग रागनियाँ भी सुनी गयी इस समय साहित्य और कला का विकास हुआ चित्रकारों ने भी संगीत के विकास में योगदान दिया। इस प्रकार राजपूत शैली के चित्रकारों ने अपनी भक्ति भावना को मूर्त करने के लिये उसका धारावाहिक चित्रण शुरू कर दिया। इसमें संगीत सम्बन्धी भावों का वर्णन रंगों और रेखाओं द्वारा किया गया। राजपूत कालीन चित्र का ब्रजभाषा काव्य से घनिष्ट सम्बन्ध है जो वैष्णव धर्म के पुनजीर्वित होने पर विकसित हुआ। गायक आत्मप्रेरक और मधुर स्वरों में गोपियों के साथ कृष्ण के छल गान गाते थे और चित्रकार कृष्ण और गोपियों की प्रेम लीलाओं का चित्रण करते थे। देवदासी प्रथा का आरम्भ हो गया यह देवदासी मन्दिरों में नृत्य रती थी यह अपने ईष्ट को रिझाने के लिये नृत्य करती थी इन्हें विधिवत संगीत और नृत्य की शिक्षा प्रदान की जाती थी संगीत के विकास में इनका बहुत योगदान है।

सल्तनत काल में भारत के धार्मिक क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ। यह समय भारतवासियों के लिये बहुत कठिन था। ऐसे समय में सुलतान अपने साथ संगीत की परम्परा लाये। फारस का संगीत भारत आया भारतीय संगीत धर्म प्रधान था। यहाँ पर ईश्वरीय भक्ति में ध्रुवपद गाने की परम्परा थी। मुसलमान शासक भारतीय धर्म को समाप्त करके इस्लाम का प्रचार कर रहे थे। अतः उनका संगीत भारत में आया। इस काल में श्रंगार रस प्रधान ख्याल गायकी का आगमन हुआ।

मुगल काल में जहाँ दरवारों में श्रंगार प्रधान संगीत था वहाँ साधारण जनता में भक्ति प्रधान संगीत प्रचार प्रसार में था।

मुगलकाल से पूर्व सल्तनत काल में भक्ति का आधार निगुर्ण बहृम को माना गया। जनमानस को तृप्त करने में यह भक्ति विफल होने लगी और मुगल काल में सुगुण भक्ति की धारा

प्रवाहित होने लगी। अनेक महान पुरूषों ने सगुण भक्ति के माध्यम से जनता को शीतलता प्रदान की। जिसमें बंगाल में चैतन्य, बनारस में तुलसी ब्रज में सूर, राजस्थान में मीरा ने बड़ा महत्व पूर्ण योगदान दिया।

ब्रज प्रवेश में कृष्ण भक्ति की धारा अविरल रूप से प्रवाहित हो रही थी। अष्टछाप के कवि कृष्ण भक्ति के पदों से ब्रज को गुंजारित कर [4] रहे थे। ये कवि थे सूरदास, कृष्णदास, परमानन्द दास, कुभंनदास, चतुर्भजदास, नंददास, गोविन्द स्वामी और छीत स्वामी। ये महान गायक और संगीत कला के आश्चर्य भी थे भक्ति साधना में इन्होंने संगीत को उपादान बनाया। संगीत की दृष्टि से अष्टछाप के कवियों का काव्य निस्संदेह उच्चकोटि का है क्योंकि इन्होंने संगीत को भक्ति का आधार प्रदान किया।

हुमायुँ स्वयं भक्तिमय संगीत को पसन्द करता था। वह गान को ईश्वरीय प्रार्थना का आवश्यक अंग समझता था। उसके समय में अनेक सूफी भक्त हुये जिन्होंने भारतीय संगीत को विकसित किया। इनका गायन का ढंग निराला था। इस समय भक्तों द्वारा भजनों का प्रयोग आम जनता में बढ़ गया था। इन भजनों के अन्तर्गत ईश्वर के अनोखे रूपों का वर्णन किया गया था। जिससे सामान्य जनता के नैतिक चरित्र का उत्थान हुआ। अतएवं हुमायँ कालीन भक्ति संगीत जनता के चारित्रिक विकास में सहायक सिद्ध हुआ और संगीत को एक नवीन शक्ति मिली।

इस प्रकार विदित है कि बौदिकाल से अब तक धार्मिक क्षेत्र में संगीत पूर्ण रूप से दर्शनीय है। संगीत पर धर्म का प्रभाव पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर होता है। समाज में विभिन्न कालों में संगीत धार्मिक धारा निरन्तर प्रवाहित रही है। अतः धार्मिक संगीत का प्रभाव समाज पर दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ

1. वीणा वादन तत्सवः श्रुति जाति विशारदः तालज्ञश्चा प्रयासेन मोक्ष मार्ग प्रयच्छति संगीत पारिजात अहोवल, पृष्ठ **3.**
2. भारतीय संगीत वाघ – डा0 लालमणि मिश्र पृष्ठ **1.**
3. भारतीय संगीत का इतिहास उमेश जोशी पृष्ठ **21.**
4. ऋग्वेद – 6/32/20 पृष्ठ **68, 165.**
5. सक्षिप्त महाभारत शान्ति पृष्ठ **02, 87.**
6. वृहत्कल्प सूत्र पाठ्य 2564.

1. जयशंकर प्रसाद पृष्ठ **4.**
2. भारतीय संगीत का इतिहास पराजये पृष्ठ **48.**
3. भारतीय संगीत का इतिहास – पराजये पृष्ठ **476.**
4. गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास भगवत शरण उपाध्याय पृष्ठ **145.**

1. भारतीय संगीत का इतिहास उमेश जोशी पृष्ठ **195.**
2. भारतीय संगीत का विकास वाचस्पति गैरोला पृष्ठ **259.**
3. सुदूरपूर्व में भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास बी0एन0पुरी पृष्ठ **3.**

1. भारतीय संगीत का वृहत इतिहास डा0 नेत्र पाण्डेय पृष्ठ **203.**
2. संस्कृति के स्वर, मोहन लाल गुप्त पृष्ठ **63.**
3. मुसलमान और भारतीय संगीत आचार्य वृहस्पति पृष्ठ **66.**
4. वृहत्कल्प सूत्र पाठ्य 2564.